पाठ 2. गिरगिट का सपना

पाठ का उद्‌देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्‌देश्य अपने गुणों को पहचानना, आत्मसंतोष की भावना को अपनाने के लिए प्रेरित करना है। हमें दूसरों से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए।

पाठ का सारांश

एक गिरगिट था। उसे खाने-पीने की कोई कमी नहीं थी परंतु फिर भी वह दूसरों से ईर्ष्या करता था। एक रात दो-चार कीड़े अधिक निगल लेने से उसे बदहजमी हो गई। इससे उसे बेचैनी होने लगी। नींद लाने के लिए अपने गिरगिट दोस्त के कहने पर उसने एक पत्ती निगल ली। पत्ती निगलते ही वह जमीन के अंदर धँसता गया और साँप बन गया। अब उसके आस-पास के सभी चूहे-चमगादड़ उससे खौफ़ खाए हुए थे। गिरगिट बने साँप का सामना नेवले से हुआ। गिरगिट ने अब नेवला बनना चाहा। सोचने की देर थी अगले ही पल वह नेवला बन गया। नेवला बना गिरगिट पेड़ की टहनी पर टँग गया। टहनी के काँटे उसके जिस्म में गड़ गए। अब नेवले बने गिरगिट ने टहनी बनने के बारे में सोचा। पेड़ की टहनी को कौवों ने अपनी चोंच से नोंचा तो गिरगिट को तकलीफ हुई। अब उसने कौवा बनना चाहा। कौवे बने गिरगिट को आसमान में उड़ते देख नीचे खड़े लड़कों ने गुलेल से निशाना साधा। जान खतरे में देखकर गिरगिट ने अपने पुराने रूप में गिरगिट ही बनना चाहा। उसने आँखें खोली तो वह वापस गिरगिट बन गया। उसने शुक्र मनाया और नींद की पत्ती खाने की सलाह देने वाले दोस्त की तलाश करने लगा।

अध्यापन संकेत

पाठ वाचन से पूर्व **पठन-पूर्व चर्चा** में पूछे प्रश्नों पर बच्चों से चर्चा करें। बच्चों से पाठ का वाचन करवाएँ। उन्हें पाठ के कठिन शब्दों का शुद्‌ध उच्चारण करने के लिए कहें। बच्चों को आत्मसंतोष की प्रवृत्ति अपनाने के लिए प्रेरित करें।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- ❖ बच्चों से पूछें, क्या उन्होंने कभी गिरगिट देखा है?
- ❖ यदि वे गिरगिट की जगह होते तो क्या बनना चाहते?

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्‌यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।